पार्वती तिर्की को साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार

हिंदी भाषा के लिए साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार पार्वती तिर्की को उनकी रचना 'फिर उगना' को दिए जाने की घोषणा हुई है। हिंदी साहित्य के इतिहास में पहली बार किसी आदिवासी को यह सम्मान हासिल हो रहा है। 'फिर उगना' पार्वती तिर्की का पहला कविता-संग्रह है। इस संग्रह की कविताएं सरल, सच्ची और संवेदनशील भाषा में लिखी गयी हैं। पाठकों को सीधे संवाद की तरह महसूस होती हैं। जीवन की जटिलताओं को काफी सहज ढंग से कहने में सक्षम हैं। इस सम्मान के लिए पार्वती तिर्की को पुरस्कार स्वरूप एक उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा 50,000 रुपए की सम्मान राशि, बाद में आयोजित होने वाले एक विशेष समारोह में प्रदान किए जाएंगे। पार्वती तिर्की झारखंड के गुमला शहर में 16 जनवरी, 1994 को जन्मी थीं, उनकी आरम्भिक शिक्षा गुमला के ही जवाहर नवोदय विद्यालय में हुई। इसके बाद उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा हासिल की और वहीं के हिन्दी विभाग से 'कुड़ुख आदिवासी गीत : 'जीवन राग और जीवन संघर्ष' विषय पर पी.एच.डी. की डिग्री ली। कविता और लोकगीतों में उनकी विशेष अभिरुचि है। पार्वती तिर्की कहानियां भी लिखती हैं।